කැලණිය විශ්වවිද්‍යාලය - ශ්‍රී ලංකාව

විවෘත සහ දුරස්ථ අධ්‍යයන කේන්ද්‍රය

ශාස්ත්‍රවේදී (සාමාන්‍ය) උපාධි ද්විතීය පරීක්ෂණය
(බාහිර) - 2008

මානවශාස්ත්‍ර පීඨය

හින්දී-HIND-E-2025

නූතන හින්දී සාහිත්‍ය ඉතිහාසය සහ නූතන හින්දී ගද්‍ය සාහිත්‍ය ග්‍රන්ථ හා උද්ධෘත

ප්‍රශ්න සංඛ්‍යාව : 07 යි

කාලය : පැය03

ප්‍රශ්න 05කට පමණක් පිළිතුරු සපයන්න. 01 ප්‍රශ්නය අනිවාර්යයි
पाँच प्रश्नों के उत्तर दीजिए। प्रश्न संख्या 01 अनिवार्य है।

---

01 निम्नलिखित किन्हीं <u>दो</u> गद्यांशों की संदर्भ सहित व्याख्या कीजिए। (25अंक)

(क) क्या करूँ जगहँसाई भी तो अच्छी नहीं लगती । शिकायत हुई तो लोग कहेंगे, नाम बड़े और दर्शन थोड़े। फिर जब वह मुझसे दहेज में एक पाई नहीं लेते तो मेरा भी यह कर्तव्य है कि मेहमानों के आदर-सत्कार में कोई बात न उठा रखूँ।

(ख) कुंठित हो जाती है? (दाँत पीसकर) धृष्ट अमात्य! राजनीति में बुद्धि कुंठित होती है, तल्वार नहीं। और तल्वार से ही अधिकार लिए जाते हैं वे अधिकार जिन्हें तुम विद्रोह कहते हो। विद्रोही तो समुद्रगुप्त है, जिसने दस्यु की भाँति मेरे जन्मसिद्ध अधिकार का अपहरण किया है और छलपूर्वक युद्ध में विजय प्राप्त की है।

(ग) जब कमल शोभित होते हैं, तब कुमुद नहीं, और जब कुमुद शोभित होते हैं तब कमल नहीं। दोनों की दशा बहुधा एक सी नहीं रहती। परन्तु इस समय,

प्रातःकाल,दोनों में तुल्यता देखी जाती है। कुमुद बंद होने को हैं ; पर अभी पूरे बंद नहीं हुए। उधर कमल खिलने को हैं, पर अभी पूरे खिले नहीं। एक की शोभा आधी ही रह गयी है, और दूसरे को आधी ही प्राप्त हुई है।

(घ) –ऐं,क्या यह मेरी ही तलाश में है? क्यों न बैल छोड़कर भाग चलूँ? तब तो और भी पकड़ा जाऊँगा ! क्या मुझसे भागा जायगा? फिर ऐसा बैल इस ज़िन्दगी में क्या फिर नसीब हो सकता है? नहीं, नहीं वह मेरी तलाश में नहीं है।

02. आधुनिक हिन्दी साहित्य के युग विभाजन का परिचय देते हुए भारतेन्दुयुगीन साहित्यिक विशेषताओं का उल्लेख कीजिए। (25अंक)

03. निम्नलिखित लेखकों में से किन्हीं <u>दो</u> की साहित्यिक सेवाओं का परिचय दीजिए। (25अंक)

(क) भारतेन्दु हरिश्चन्द्र
(ख) महावीर प्रसाद द्विवेदी
(ग) प्रेमचन्द
(घ) सूर्यकान्त त्रिपाठी निराला

04. निम्नलिखित गद्यांशों में से किसी <u>एक</u> की भावार्थ सहित व्याख्या कीजिए। (25अंक)

(क) किसी ने सच कहा है कि संसार फूलों की नहीं, काँटों की शय्या है। जीवन एक संग्राम है। इसमें वे ही विजय प्राप्त करते हैं जो संतोष, धैर्य, बुद्धि और वीरता से काम लेते हैं। जीवन में पग-पग पर कठिनाइयाँ और बाधाएँ आती रहती हैं। उनसे टक्कर लेकर सफलता प्राप्त करना कोई सरल काम नहीं है। बहुत से लोग कठिनाइयों और बाधाओं को देखकर हिम्मत ही हार बैठते हैं। इसके विपरीत कुछ व्यक्ति ऐसे होते हैं जो विपत्ति, कठिनाई तथा बाधा का डटकर मुकाबला करते हैं। वे संघर्ष को ही जीवन मानते हैं। सुख- दुःख को समान समझकर अपने कर्त्तव्य का पालन करने में जुटे रहते हैं। वे कठोर

परिश्रम तथा प्रयत्न में आनंद का अनुभव करते हैं ऐसे लोग ही जीवन-संग्राम में सफल तथा विजयी होते हैं।

(ख) बरसात के दिन हैं, सावन का महीना। आकाश में सुनहरी घटाएँ छाई हैं। रह-रहकर रिमझिम वर्षा होने लगती है। अभी तीसरा पहर है, पर ऐसा मालूम हो रहा है, शाम हो गयी। आमों के बाग में झूला पड़ा हुआ है। लड़कियाँ भी झूल रही हैं और उनकी माताएँ भी। दो- चार झूल रही हैं, दो- चार झुला रही हैं। कोई कजली गाने लगती, कोई बारहमासा। इस ऋतु में महिलाओं की बाल स्मृतियाँ भी जाग उठती हैं।

05. 'निर्मला' उपन्यास के पठित अंश के कथानक को सरल हिन्दी में लिखिए। (25अंक)

अथवा .

'निर्मला' उपन्यास के पठित अंश के आधार पर तत्कालीन समाज एवं संस्कृति का विवरण दीजिए।

06. 'समुद्रगुप्त पराक्रमांक' नाटक के पठित अंश के आधार पर निम्नलिखित पात्रों में से किन्हीं <u>दो</u> के चरित्र-चित्रण कीजिए। (25अंक)

(क) सम्राट समुद्रगुप्त

(ख) महाराजकुमार काच

(ग) चंद्रगुप्त

(घ) रामगुप्त

07. 'परमेसर' शीर्षक रेखाचित्र के आधार पर परमेसर के चरित्र पर प्रकाश डालिए। (25अंक)

अथवा

पठित एक रेखाचित्र के कथानक को अपनी हिन्दी में लिखिए।